।। ओ३म् ।।

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष – 94 अंक 03 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 5/- नवम्बर प्रथम 05 नवम्बर से 20 नवम्बर 2020

आर्य संस्कृति के संवाहक एवं संवर्धक

महर्षि दयानन्द के अनुयायी आर्य पुरूषों को विनम्र श्रद्धान्जलि

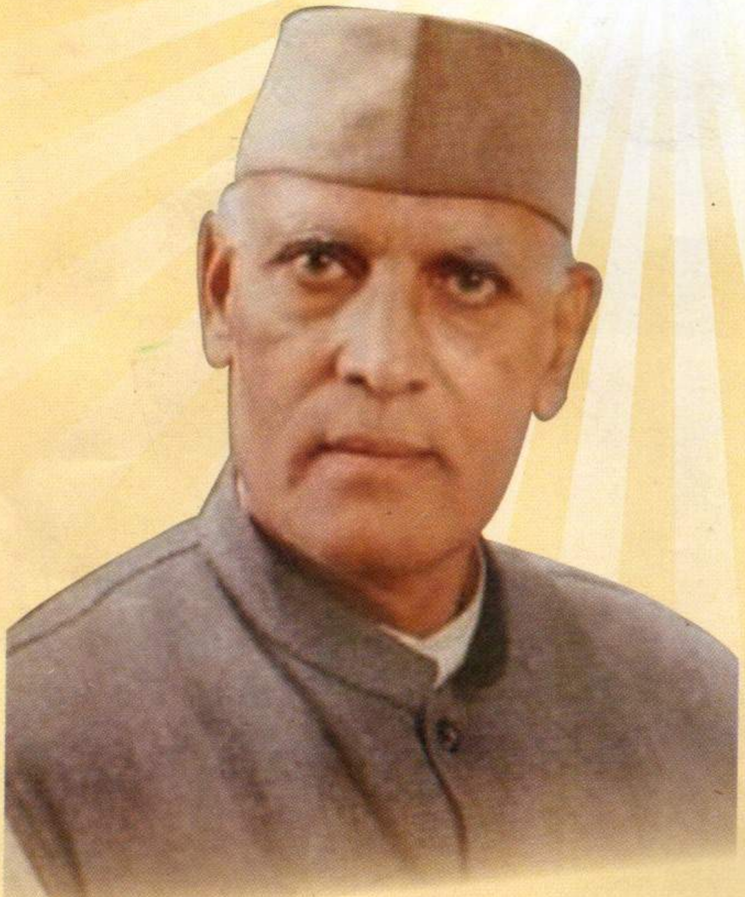

सत्यपाल जी पथिक

अमर मुनि जी

कलेवा संस्था के श्री मदन जी व दादू जी के मतानुयायी सन्यासी जी से मानव सेवा विषय पर चर्चा हुई ।

सभा कार्यालय में कार्य करते हुवे ।

आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश की पत्नी एवं पुत्र से वार्ता करते सीकर सांसद श्री सुमेधानन्द सरस्वती

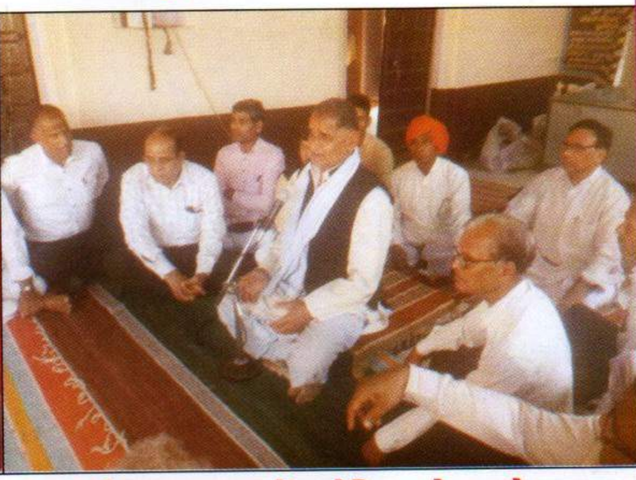

आर्य समाज शाहपुरा में सम्बोधित करते सभा के उपप्रधान श्री जगदीश प्रसाद आर्य

ओ३म्

आर्यमार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पंचमी कृष्णपक्ष कार्तिक मास, सम्वत् 2077, कलि सम्वत् 5121, दयानन्दाब्द 196, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,121

आर. एन. आई नं.10471/60

संरक्षक

1. महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.)
2. श्री रमेश गुप्ता (आर्य), अमेरिका
3. श्री दीनदयाल जी गुप्त (डॉलर बनियान)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
2. श्री विजय सिंह भाटी
3. श्री जगदीश प्रसाद आर्य
4. श्री मदनमोहन आर्य

संपादक

श्री देवेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक प्रबन्धक

1. आचार्य रविशंकर आर्य
2. डॉ. सन्दीपन आर्य
3. श्री अशोक शर्मा
4. श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति
5. श्री ओमप्रकाश आर्य रावतभाटा

आर्य मार्तण्ड वार्षिक शुल्क – ₹ 100/-

त्रैमासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 3100/-

षाण्मासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 5100/-

वार्षिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 11000/-

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हनुमान ढाबे के पास, राजापार्क, जयपुर –302004

0141-2621879, 9352547258

e-mail : aryamartand@gmail.com

e-mail : arya.sabha1896@gmail.com

अनुक्रम

- संपादकीय संक्रमण.... 04 से 04 तक
- वेदामृत 05 से 05 तक
- रसायन विज्ञान... 05 से 06 तक
- प्रेरक प्रसंग... 06 से 06 तक
- प्रेरक एवं अनुकरणीय 07 से 07 तक
- महर्षि दयानन्द... 08 से 08 तक
- दुःख का मुख्य ... 09 से 11 तक
- जोधपुर में वैदिक ... 11 से 11 तक
- विचार–मंजूषा ... 11 से 11 तक
- सत्गुणों तथा ईश्वर ... 12 से 13 तक
- आर्य समाज मंदिर... 14 से 14 तक
- आवश्यक सूचना ... 14 से 14 तक

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अंतर्गत करमुक्त है।

मुद्रण दिनांक 04–11– 2020

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री देवेन्द्र कुमार ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी. के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिध सभा राजापार्क जयपुर से प्रकाशित, सम्पाक–श्री देवेन्द्र कुमार।

संपादकीय संक्रमण का दौर

आज अपना देश नहीं अपितु पूरा विश्व संक्रमण के दौर से गुजर रहा हैं। हम अपने देश की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करेंगे। एक तरफ पाकिस्तान और चीन की तनातनी दूसरी ओर कोरोना महामारी का भयंकर प्रकोप, पर्यावरण की समस्या, अतिवृष्टि–अनावृष्टि की समस्या, बेरोजगारी , बेहाल मजदूरों की स्थिति विद्यार्थियों की पढ़ाई परिबाधित, राजनेताओं की स्वार्थपूर्ण राजनीति, कैंसर जैसे रोगों का बढ़ता प्रकोप, खाद्य–पदार्थो में रासायनिक तत्वों की बहुलता– ऐसे में मानव का जीवन संघर्षपूर्ण होकर समस्याओं में उलझ गया है। इस संक्रमण के दौर में हमें बड़े धैर्य से काम लेना होगा। न सरकार को कोसना है और न भाग्य को दोषी ठहराना है। समस्याओं से जूझकर हम आगे बढ़ सकते हैं। वैसे तो अपना देश प्रारंभ से ही मेहनतकश, जुझारु रहा हैं तो ऐसे समय में हम अपने धैर्य को बनाये रखें। इस अर्थ प्रधान युग में अर्थ की समस्या तो हैं पर हम सादा जीवन और उच्च विचार को अपनाकर भी सुख शांति से जीवन जी सकते हैं। सादगी में जीते हुए हम उपलब्धियों को प्राप्त करें।

जब समस्याओं का दौर चलता हैं तब प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध से भर जाना चाहिए। यह ध्यान रखना होगा, हमारा महत्व तभी होगा जब देश रहेगा। बिना देश के हमारे जीने का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। प्रतिकूल परिस्थितियों में हमें जीना आना चाहिए। न हमें तनाव में आना हैं और न ही दूसरे पर दोष मढ़ना हैं। प्रायः देखा जाता हैं कि विपक्षी राजनेता समस्या सुलझाने और सहयोग देने की अपेक्षा तुच्छ राजनीति करने पर उतारु हो जाते हैं। ऐसा किसी भी सूरत में राष्ट्रहित में नहीं हैं। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी जो देशहित में निर्णय ले, जो भी जनता से अपील करें उसे हमें जी–जान से पालन करना चाहिए। राष्ट्र की सम्पत्ति, राष्ट्र की जल–वायु, राष्ट्र की मिट्टी, राष्ट्र के नदी–पर्वत–वन बाग–बगीचे–जीव–जन्तु सब रक्षणीय हैं। हर नागरिक इनकी शुद्धता, पवित्रता का ध्यान रखें। राष्ट्र की सम्पत्ति की क्षति होगी तो हमारा ही नुकसान हैं। अभी स्वच्छ भारत अभियान चल रहा हैं। हम गन्दगी न फैलायें कूड़े–कचरे इधर–उधर न फेंकें। वृक्षों के संरक्षण पर ध्यान दें। वनों की कटाई न होने दें। ऐसा तभी संभव होगा जब हमारे अन्दर राष्ट्रप्रेम की भावना होगी। एक छोटी सी बात रास्ते में पड़े कचरे को या काँटे को हटा देना भी राष्ट्रप्रेम को दर्शाता हैं। अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन करना बहुत बड़ी राष्ट्रभक्ति हैं।

अभी आर्थिक मंदी का दौर चल रहा हैं। पेट्रोल–डीजल महँगा हैं। लोग सड़कों पर उतर आते हैं, विरोध करना शुरू कर देते हैं। हम क्यों न इनके प्रयोग को कम करें। हम क्यों इन प्रदूषण उत्पन्न करने वाले वाहनों का अधिक प्रयोग करते हैं। ठीक हैं आना–जाना पड़ेगा, हम इतने आगे बढ़ चुके हैं कि पीछे की ओर नहीं लौट सकते, किन्तु सुख–शांति–आनन्द व तनाव मुक्ति के लिए पीछे की ओर भी लौटना पड़ेगा। पीछे की ओर लौटने का अर्थ हैं वेदों की ओर लौटने से हैं। इन समस्त समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन–शैली हैं। जब तक मनुष्य वेदों की ओर नहीं लौटेगा तब तक उसे शान्ति व आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। पहले भी विज्ञान था और आज भी हैं किन्तु पहले का विज्ञान पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करता था। आज का विज्ञान पर्यावरण की रक्षा नहीं कर पा रहा हैं। सभ्यता के नाम पर हम अधिकतम प्रकृति का विनाश ही कर रहे हैं। केवल अर्थ को प्रधानता देकर जीवन को सुखी नहीं बनाया जा सकता। जीवन जीने की शैली हम वेदों की ओर लौटकर सीख सकते हैं। भौतिकवादी चकाचौंध हमें केवल दुःख–तनाव देती हैं, शान्ति नहीं।

घर–परिवार–गाँव से लेकर देश और विश्व स्तर की बात वेद बताता हैं। यही वह मार्ग हैं जो, पूर्णता लिए हुए हैं। सार्वभौमिक सुख–शान्ति का मार्ग हैं। आज यह विश्व कहाँ जा रहा हैं ? इसे वैदिक दृष्टिकोण को सामने रखकर अनुमान लगाया जा सकता हैं। मनुष्य–मनुष्य का शत्रु बनता जा रहा हैं। एक देश दूसरे देश का शत्रु बन रहा हैं। ऐसा क्यो ? ऐसा इसलिए हैं कि उसे जीवन का उद्देश्य ही पता नही हैं। खाओ पियो मौज करो– यह भौतिकवादी दृष्टिकोण जीवन को सुख–शांति से कोसों दूर कर देता हैं। अतः हमें वेदों की ओर झाँकना होगा। उसी परिप्रेक्ष्य में देश को देखना होगा। यह आज के युग की पुकार हैं। प्रकृति का विनाश करना ही विकास नहीं कहलाता।

वेदामृत

युक्तेन मनसा वयं देवस्यसवितुः सवे।
स्वर्ग्याय शक्त्या।। यजु0 11/2

ऋषि–प्रजापति, देवता–सविता, छन्द–शंकुमती गायत्री, स्वर–षड्ज

पदार्थ– हे योग और सत्यविद्या को जानने की इच्छा करने वाले मनुष्यों! जैसे (वयम्)= हम योगी लोग, (युक्तेन)= योगाभ्यास किए (मनसा)= विज्ञान और (शक्त्या)= सामर्थ्य से (देवस्य)= सबको चिताने तथा (सवितुः)= समग्र संसार को उत्पन्न करने हारे ईश्वर के (सवे)= जगत् रूप इस ऐश्वर्य में (स्वर्ग्याय)= सुख प्राप्ति के लिए प्रकाश को अधिकाई से धारण करें, वैसे तुम लोग भी प्रकाश को धारण करो।

भावार्थ– जो मनुष्य परमेश्वर की इस सृष्टि में समाहित हुए योगाभ्यास और पदार्थ विद्या का अभ्यास करे तो अवश्य सिद्धियों को प्राप्त हो जावे।

इस मंत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भाष्य करते हुए ऐसे मनुष्य को संबोधित किया है जो योग और सत्यविद्या को जानने की इच्छा रखते हैं। योग का सम्बन्ध अध्यात्म विद्या से हैं और सत्यविद्या का सम्बन्ध भौतिक ज्ञान से हैं। इन दोनों प्रकार के ज्ञान से दो प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं– 1. मानसिक सुख 2. शारीरिक सुख। सफल जीवन के लिए दोनों प्रकार के सुख आवश्यक हैं। मानसिक सुख योग द्वारा प्राप्त होता हैं और शारीरिक सुख भौतिक साधनों के द्वारा प्राप्त होता है। एक व्यक्ति योगाभ्यास के द्वारा बड़े चैन से जीवन व्यतीत करता हैं उसे कोई आधि–व्याधि नहीं। यह मानसिक सुख हैं। एक व्यक्ति गर्मी में पंखे के नीचे बैठकर गर्मी से निजात पा रहा हैं। यह शारीरिक सुख हैं। इन दोनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति के लिए अभ्यास किया जाना चाहिए।

मंत्र में दोनों प्रकार के सुखों को प्राप्त करने के लिए प्रकाश की अधिकता पर बल दिया गया हैं। योगाभ्यास के प्रकाश के द्वारा परमात्मा के आनन्द को प्राप्त किया जा सकता हैं और सत्यविद्या के प्रकाश के द्वारा परमात्मा के द्वारा प्रदत्त सुख–साधनों का उचित उपयोग किया जा सकता हैं। इसी को मध्यम मार्ग कहते हैं। मध्यम मार्ग सबसे अच्छा होता हैं। इससे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष– इन चारों की सिद्धि हो जाती हैं। इस संसार में रहते हुए परमात्मा के आनन्द–मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। इस मंत्र में योग और विज्ञान का समन्वय दर्शाया गया हैं। दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। बिना योग के विज्ञान विनाशकारी सिद्ध होगा और बिना विज्ञान के योग एकांगी हो जायेगा। अतएव दोनों का सन्तुलन आवश्यक हैं। यह आज के युग की पुकार भी हैं। दोनों का समन्वय अपेक्षित हैं।

रसायन विज्ञान के आधार पर परमात्मा का अस्तित्व

रसायन विज्ञान, विज्ञान की वह शाखा हैं जिसमें विभिन्न तत्वों के संघटन एवं उनके भौतिक एवं रासायनिक गुणों का अध्ययन करते हैं। प्रत्येक तत्व सूक्ष्म कणों से बना हैं जिन्हें परमाणु या अणु कहते हैं। वेद के अनुसार परमपिता परमात्मा कण–कण में व्याप्त हैं और प्रत्येक कण परमाणुओं से बने हैं। इससे यह सिद्ध होता हैं कि प्रत्येक परमाणु में परमात्मा व्याप्त हैं। परमाणु के कण इलेक्ट्रान, प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन गतिशील एवं ऊर्जायुक्त हैं। परमाणु के कणों में गति एवं ऊर्जा का कारण भी उसमें परमात्मा की व्यापकता हैं। वेदों के अनुसार समस्त ब्रह्माण्ड एवं सृष्टि का शक्तिमय रूप ऋत एवं सत्य से ही दृष्टिगोचर होता हैं, क्योंकि ऋत एवं सत्य सृष्टि के मूलभूत तत्व हैं। ऋत गतिशील तत्व हैं तथा सत्य केन्द्रभूत तत्व हैं। सत्य अर्थात् केन्द्र गति करता हुआ भी स्थिर प्रतीत होता हैं। जैसे परमाणु का नाभिक जो अपने अक्ष पर गति करते हुए, परमाणु केन्द्र में स्थिर प्रतीत होता हैं। ऋत से आवृत्त सत्य केन्द्र मे प्रतिष्ठित रहता हैं। इस सृष्टि में ऋत तत्व सत्य के चारो ओर गति करता रहता हैं। यह ठीक उसी प्रकार से हैं जैसे आधुनिक रसायन विज्ञान के अनुसार परमाणु के नाभिक में स्थित प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन के चारो ओर इलेक्ट्रॉन गति करता हैं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि सृष्टि का ऋत तत्व इलेक्ट्रॉन हैं तथा सत्य तत्व प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन है।

सत्य तत्व की विविधरूपता जो देश काल के अनुसार नित नये–नये रूपों में प्रकट होती हैं वही सृष्टि

के चक्र को बनाये रखती हैं। सृष्टि के कुछ तत्वों में सत्य तत्व की कमी या अधिकता के फलस्वरूप अन्य तत्वों के निर्माण की क्रिया होती हैं, क्योंकि केन्द्र में परिवर्तन होने से उनके ऋतमंडल अर्थात्, गतिशील मंडल में परिवर्तन होने लगता हैं जिससे नये तत्वों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू होती हैं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि विभिन्न तत्वों का निर्माण सृष्टि के विभिन्न तत्वों में सत्य तत्व की कमी या अधिकता के परिणामस्वरूप हुआ हैं।

रसायन विज्ञान के अनुसार ये विभिन्न तत्व आपस में रासायनिक बंध बनाकर विशेषरूप से संयोजित होकर विशेष पदार्थ या यौगिक का निर्माण करते हैं। जैसे–जब कार्बन के परमाणु चतुष्फलकीय संरचना में चार अन्य कार्बन परमाणुओं से विशेषरूप से संयोजित होते हैं तो डायमण्ड (हीरा) बनता हैं और जब यही कार्बन परमाणु षट्फलकीय संरचना में तीन अन्य कार्बन परमाणुओं से विशेष रूप से संयोजित होते हैं तो ग्रेफाइट बनता हैं। यहाँ परमाणु एक ही तत्व के हैं लेकिन उनके संयोजन की विधि की भिन्नता के कारण अलग–अलग पदार्थ प्राप्त होते हैं। डायमण्ड एवं ग्रेफाइट। इस तथ्य पर यदि हम विचार करें तो हमें यह ज्ञान होगा कि तत्वों के परमाणुओं के आपस में बंध बनाने एवं संयोजित होने की क्रियाविधि को कोई सत्ता नियंत्रित कर रही हैं जिसके कारण समान तत्वों के परमाणुओं के संयोजन से विभिन्न गुण वाले पदार्थ प्राप्त होते हैं और सत्ता ईश्वर अर्थात् परमपिता परमात्मा हैं जो विभिन्न रासायनिक क्रियाओं को संचालित करता हैं एवं उनसे बनने वाले विभिन्न उत्पादों के निर्माण की क्रिया को शक्ति एवं गतिशीलता ऋत तत्व के रूप में प्रदान करता हैं।

इसी प्रकार हमारे शरीर में होने वाली जैव रासायनिक क्रियाओं के संचालन में परमपिता परमात्मा की शक्ति निहित हैं। जब हम भोजन करते हैं तो हमारी पाचनशक्ति के द्वारा उसका पाचन होता हैं तथा इस पचे हुए भोजन का अवशोषण हमारी आँतों द्वारा होता हैं तथा इस अवशोषित भोजन से हमारे शरीर में रक्त, मांस, मज्जा आदि प्रमुख तत्वों का निर्माण होता हैं। जैसे–किसी परिवार में चार बच्चे हैं तो इन चारों बच्चों का पारिवारिक वातावरण एक जैसा हैं। उनका खानपान भी एक जैसा होता हैं फिर भी उनका शारीरिक, मानसिक विकास एवं व्यक्तित्व अलग–अलग होता हैं। यह तथ्य हमे संकेत करता हैं कि शरीर में होने वाली प्रत्येक जैव रासायनिक क्रिया के लिए विशेष शक्ति की आवश्यकता होती हैं जिसे जैव शक्ति कहते हैं यह जैवशक्ति परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त होती हैं। यही जैवशक्ति विभिन्न जीवधारियों में अलग–अलग तरह से जैव रासायनिक क्रियाओं को संचालित करती हैं इसीलिए प्रत्येक का व्यक्तित्व भिन्न–भिन्न होता हैं।

इस विवेचन से यह स्पष्ट हैं कि रासायनिक अभिक्रियाओं का संचालन परमपिता परमात्मा की दो शक्तियों ऋत (गतिशील) तत्व एवं सत्य (केन्द्र भूत) तत्व के द्वारा होता हैं और यह तथ्य भी प्रमाणित हो जाता हैं कि परमात्मा कण–कण में व्याप्त हैं क्योंकि प्रत्येक कण एक परमाणु के समान हैं तथा परमाणु के अवयवी कणों की क्रियाओं में एवं परमाणुओं की क्रियाओं मे ईश्वर की सत्ता व्याप्त हैं।

– योगेश आर्य, संरक्षक
आर्यसमाज रावतभाटा,

प्रेरक प्रसंग

विगत दिनांक 12 अक्टूबर 2020 को विशेष कार्य से जोधपुर जाना हुआ। वहाँ की सभी आर्य समाजों से आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधि होने के सम्बन्ध से मैनें दशांश देने का निवेदन भी किया, जो कि मेरा कर्तव्य हैं। इसी क्रम में जोधपुर के जालौरिया बास आर्य समाज के प्रधान श्री श्याम आर्य जी ने मुझे दशांश के विषय में बहुत ही मार्मिक बात कही। वे बोले आर्य जी, हमारे समाज से आपको हमेशा की तरह पूरा दशांश ही मिलेगा। आप इसकी चिन्ता न करें। हमारे समाज का जितना सकल दशांश बनता हैं उतना ही आपको भेजा जायेगा। हम इसमें लेश मात्र भी कम ज्यादा नहीं करते हैं।

श्री श्याम आर्य जी की ये तीन पंक्तियाँ सुनकर उनके प्रति मैं कृतज्ञता से नतमस्तक हो गया। वेद पथ के पथिक हम आर्यजन हमारे ही संगठन के आन्तरिक लेन देन के उत्तरदायित्व निर्वहन में प्रमाद करते हैं। पद लोलुपता, द्वेष, क्या हमें श्री श्याम आर्य जी के नैतिक गुणों का अनुसरण नहीं करना चाहिये?

– अमित आर्य

प्रेरक एवं अनुकरणीय रहा चौधरी किशनाराम जी का जीवन

श्री किशनाराम जी आर्य ने सम्पूर्ण जीवन में कई उन्नतशील कार्य किये। उन्होंने कई जगहों पर दान पुण्य किया। इन्होंने अपने पौत्रो एवं पौत्री को गुरुकुल में आठ वर्ष पढ़ाया वे अजमेर परोपकारिणी सभा में जुड़े एवं उन्होंने 2000 लोगों को भी जोड़ा। इनको आर्य समाज में आने की प्रेरणा गुरुकुल झज्झर के आचार्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती, हरियाणा में मिली ये बहुत सत्संगों में जाना पसन्द करते थे। इसी क्रम में प्रकार उन्होंने नेपाल, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात तक ये आर्य समाज के कार्यक्रम एवं प्रचारार्थ गये। इनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित था। इनके घर में प्रतिदिन पूरा परिवार बैठकर हवन सन्ध्या करता हैं। इनकी सदा सोच उत्तम रही हैं। ये चाहते थे कि लोग सत्य सनातनी बने तथा जिला, राज्य, देश एवं विश्व को आगे बढ़ाऐं। इनकी सरकारी नौकरी थी, जिसमें ये ग्राम सेवक के पद पर थे। जब वे सेवा से सेवा निर्मित हो गये तब बढ़े ही धूमधाम से घर में तीन दिन का सत्संग कार्यक्रम आयोजित किया। इसके बाद उन्होंने घर में कई बार प्रोग्राम आयोजित किये, उन्होंने जिन लोगों को सहायता चाहिए थी उन लोगों की निःशुल्क सहायता की तथा पूरे नागौर में वेद प्रचार रथ निकालते तथा कई जगह 5–5 दिन तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ कराते थे। इनका बहुत ही सादा जीवन था। अन्तिम समय पर जब में उनसे मिला तब भी औरों की चिन्ता ज्यादा की ये चाहते थे कि मेरे बाद मेरा परिवार आर्य समाज के मार्ग पर कार्यशील रहे। इसके साथ ही 14 अक्टूबर 2020 को सांयकाल के समय ये चमकता सूरज अस्त हो गया अर्थात् इनका देहान्त हो गया।

28 फरवरी 2010 श्री किशनाराम जी आर्य पी.ई.ओ. जिला परिषद से रिटायमेंट हो गये। ये 3 साल तक नागौर जिले की उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। ये साल में एक महीने घर घर जाकर हवन सन्ध्या करवाते थे।

यशमुनि, पर्बतसर, नागौर

आर्य जीवन प्रेरक प्रसंग

वे आर्य समाज से कैसे जुड़े

बात सन् 2005 की हैं। उन दिनों मैं प्रातःकाल 8:00 बजे रविवार को यज्ञ प्रारंभ कर देता था। आर्यसमाज से यज्ञ की ध्वनियाँ माइक से बाहर स्पष्ट सुनाई देती थीं। एक 52 साल के व्यक्ति प्रतिदिन उसी रास्ते से सब्जी खरीदने बाजार जाते थे। जाने कितनी बार वे उसी रास्ते से गुजरे होंगे लेकिन उन्होंने कभी भी उस ध्वनि की ओर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन वे बाजार जा रहे थे। यज्ञ की ध्वनि पूर्ववत् कानों में सुनाई पड़ी। रास्ते में उन्होंने सोचा कि वहाँ आर्य समाज मन्दिर में होता क्या हैं? एक बार चलकर देखना चाहिए। अगले रविवार को वे बाजार जाते समय साइकिल से उतरकर यज्ञ में आकर सम्मिलित ही हो गए। यज्ञ के चारों ओर लोग बैठे आहुतियाँ दे रहे थे। वे महाशय पीछे दरी पर बैठ गए। पूरे यज्ञ के समय यज्ञप्रक्रिया को देखते रहे। जब यज्ञ समाप्त हुआ और सत्संग प्रारंभ हुआ तो वे उसमें भी आकर बैठ गए। कार्यक्रम के अन्त में उनका परिचय हुआ। मैंने उनको मथुरा वाली पुस्तक नित्य कर्म विधि और ''आर्य समाजः एक परिचय'' पुस्तक भेंट की वे महाशय उसे लेकर चले गए। उन्होंने घर पर उन दोनो पुस्तकों को पढ़ा और बहुत अच्छी लगी। उसी हफ्ते में वे हमारे घर पर आए और मैंने उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया और कहा कि इस पुस्तक को आप बहुत ध्यान से रुचि से पढ़ियेगा। उन्हें बड़े आदर के साथ बैठाया था। बातचीत किया था। अपने बारे में बताया था। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा, कई जगह शंकाएँ की तब मैनें उसका

समाधान किया। धीरे–धीरे उनका प्रत्येक रविवार को आर्य समाज में आना शुरू हुआ। पुनः मैनें उनको ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्य पर्व पद्धति, उपदेश मंजरी, आर्य पत्रिकाएँ आदि दी। वे समस्त पुस्तकों को पढ़ते गए और आर्य समाज की विचारधारा उनके गले उतरती चली गई।

धीरे–धीरे यह सामान्य परिचय तर्क और धर्म विषयक चर्चा में बदल गया। वे अनेकशः पौराणिक विचारों पर प्रश्न करते थे और मैं उसका उत्तर देता था। साल दो साल में उनके ऊपर आर्य समाज का रंग चढ़ गया और वे एक निष्ठावान आर्य बन गए। आर्य समाज के प्रति उनकी गहरी निष्ठा उत्पन्न हो गई। लगभग आठ पुस्तकों को उन्होंने अपने स्वयं से प्रकाशित करवाया और वैदिक संसार के आजीवन संरक्षक सदस्य बन गए। राजस्थान परमाणु बिजलीघर में कार्यदक्ष पद पर कार्य करते हुए वर्ष 2014 में सेवानिवृत्त हुए और तत्पश्चात् अपने गाँव लस्सानी दोयम (निकट ब्यावर) जिला अजमेर में रहते हुए गाँव में आर्य समाज का प्रचार करते हैं। उनका नाम है– **मोहन लाल भाट**। अब वे एक आर्य जिज्ञासु विद्वान् बन चुके हैं। लगभग 2500 वेदमंत्र ऐसे ढूंढे हैं जिनकी पुनरावृत्ति हैं। जो वैदिक संसार में उनके समाधान हेतु छापा गया हैं।

—ओम प्रकाश आर्य

विनम्र निवेदन

आदरणीय आर्यजन

सादर नमस्ते

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान वर्तमान में प्रचार प्रसार एंव संगठनात्मक कार्यों सहित अनेक गतिविधियों का संचालन कर रही है। राजापार्क स्थित सभा के कार्यलय को विगत वर्ष में सुव्यवस्थित किया गया है साथ ही सभा के मुख पत्र आर्य मार्तण्ड नये प्रारुप में आपके हाथों में प्रेषित किया जा रहा है। विगत माह ही आयकर विभाग से सभा को 80 जी के अन्तर्गत छूट का पत्र प्राप्त हुआ है। जिसके लिये सभा विगत तीन वर्ष से प्रयासरत थी। इस कार्य की सफलता में चार पांच आर्य सज्जनों का विशेष प्रयास काम आया। कोरोना जैसे संकट काल में भी सभा कार्यालय सक्रिय रहा है। आर्य जनों तथा अन्य जनता की सेवा में सहयोग के लिये सभा कार्यालय प्रातः 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक पूर्णतः सक्रिय एंव उपलब्ध रहता है।

विशेष परिस्थितियों में आवश्यकता पड़ने पर 24 घंटे सभा कार्यालय आर्यजनों की सेवा में उपस्थित होने में तत्पर रहता है। इसी कारण कार्यालय में देश एवं राज्यभर से आर्यजनों का तथा स्थानीय जनों का आवागमन बढ़ा है। अनेक सज्जन वैदिक साहित्य सामग्री, ओम ध्वज आदि के लिये सभा कार्यालय से ही सम्पर्क करते हैं। परन्तु सभा में इसकी पर्याप्त एंव समुचित व्यवस्था न होने के कारण सज्जन इसका लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इसके लिए कार्यालय इस व्यवस्था को भी सुचारु करने हेतु सभा प्रयासरत है। इसके लिये प्रर्याप्त साहित्य एवं अन्य सामग्री सहित उनके रखने हेतु अल्मारियों आदि की व्यवस्था करनी आवश्यक है। इस हेतु सभा आप सभी आर्य समाजों एवं आर्य जनों से पर्याप्त आर्थिक सहायता की अपेक्षा रखती है। आशा है राजस्थान स्थित आर्यसमाज एवं आर्यजन इस कार्य में अपेक्षित सहयोग प्रदान कर महर्षि दयानन्द के इस इस कार्य को आगे बढाने में अपना योगदान देंगे।

वे आर्य सज्जन जो पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण कर चुके हैं अथवा पूर्ण किया हुवा मानते है वे निःस्वार्थ अपने जीवन को वेद, आर्य समाज तथा महर्षि के आदर्शों पर चल कर सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचार प्रसार कार्यों में लगाने की इच्छाशक्ति रखते हैं वे निश्छल एवं निःस्वार्थ भाव से स्वजीवन को वेद मार्ग पर लगाकर स्वंय को धन्य करने के लिये सभा कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

दुःख का मुख्य कारण अविद्या और इसके निवारणार्थ वेदोपांग– षड् दर्शनों का परिचय

ईश्वरकृत वेद ऋषिकृत वेदानुकूल ग्रन्थ मानवमात्र के लिए अप्रतिम और सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि हैं। प्रत्येक प्राणी सुख का अभिलाषी हैं। आज विज्ञान प्रकृति के रहस्यों को निरन्तर उजागर कर जीवनोपयोगी क्षेत्र में नाना प्रकार के अद्‌भुत भौतिक सुख सुविधा के साधन उपलब्ध करा रहा हैं जिससे जीवनस्तर में आश्चर्यजनक उन्नति हुई हैं लेकिन इसके फलस्वरूप उत्पन्न प्राकृतिक असंतुलन और आणविक आयुधों की अंधी प्रतिस्पर्धा जीवन के अस्तित्व को ही संकट में डाल रही हैं। इसका कारण वेदप्रणीत ज्ञान–विज्ञान की परंपरा का ह्रास होना हैं। अविद्या सब दुःखों का मूल कारण हैं। ऋषिवर दयानन्द ने दुःख को अविद्यादि के निमित्त से माना हैं। वेदज्ञान के अभाव में कालान्तर में बहुत से अवैदिक मत, पंथ, सम्प्रदाय, मान्यताओं और परम्पराओं ने जन्म लिया। वेद और ऋषिकृत वेदानुकूल शास्त्रों की जगह नये रचित धर्मग्रंथों और पुराणों ने ले लिया। ज्यादातर अवैदिक मत–मतान्तरों को वेदानुकूल होना कहकर बताया। सभी पुराणों को महर्षि वेदव्यासकृत प्रसिद्ध किया जो कि वास्तविकता से बहुत दूर हैं। वेदों का पठन–पाठन के अभाव में आम जनता ने इस झूठ पर विश्वास कर लिया जिससे नाना प्रकार की भ्रांतियाँ और अंधविश्वास को जन्म मिला। परस्पर विरोधी होने से संशय और अविश्वास के कारण शिक्षित व्यक्ति भी भ्रमित हो जीवनपर्यन्त सत्यज्ञान से विमुख रहा। वह भ्रान्तिपूर्ण मान्यताओं में ही अपने जीवन की इतिश्री समझकर संतुष्ट होने की चेष्टा करता रहा हैं। उसका यह व्यवहार आत्मा के मूल स्वभाव के विपरीत होने से अंतःकरण में सुख–शांति का भाव पैदा करने के बजाय उद्विग्नता, खिन्नता और अशान्ति को जन्म देता हैं जिससे दीर्घकाल में आत्मबल क्षीण होता हैं। संशयात्मक वृत्ति के उदय होने से मानसिक व शारीरिक बल का ह्रास होता हैं और शनैः–शनैः मानसिक गुलामी का शिकार हो अवसाद को प्राप्त होता हैं। यह बहुत चिन्तनीय अवस्था हैं, काफी हद तक यह देश की अवनति, पिछड़ेपन, विपन्नता, सदियों की परतन्त्रता, सामाजिक असमानता, परस्पर विरोध और असंगठन का कारण रहा हैं।

क्या इसका समाधान है? इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द ने कहा हैं–"यदि कोई मुझसे पूछे कि इस पागलपन का कोई उपाय भी हैं या नहीं? तो मेरा उत्तर यह है कि यद्यपि रोग बहुत बढ़ा हुआ हैं तथापि इसका उपाय हो सकता हैं। यदि परमात्मा की कृपा हुई तो रोग असाध्य नहीं हैं। वेद और छः दर्शनों की सी प्राचीन विद्याओं का ज्ञान प्राप्त हो सके...सुगमता से शीघ्र लोगों की आँख खुल जायेगी और दुर्दशा दूर होकर सुदशा प्राप्त होगी।" (उपदेश मंजरी)

वैदिक वाङ्मय के अनुसार निम्नलिखित ऋषिप्रणीत षड् दर्शन हैं– पूर्व मीमांसा– जैमिनी कृत, वैशेषिक दर्शन– कणाद कृत, न्याय दर्शन– गौतम कृत, सांख्य दर्शन– कपिल मुनि, योग दर्शन– पतंजलि कृत, उत्तर मीमांसा– बादरायण (व्यास) कृत। उत्तर मीमांसा को वेदान्त भी कहा जाता हैं।

उपर्युक्त सभी आस्तिक दर्शनों का सन्देश चराचर जगत् के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्वों का यथार्थ ज्ञान जिससे मनुष्य प्रकृति का विवेक व कुशलपूर्व उपयोग कर भौतिक जीवन का सुख प्राप्त करते हुये अनंत में उसके बन्धन से छूटकर परमात्मा के परमानन्द को प्राप्त कर सके। वेद ईश्वर कृत होने से स्वतः प्रमाण हैं और दर्शनों का मूल वेद होने से प्रमाणित हैं। इन छः दर्शनों के संयुक्त ज्ञान से अणु से लेकर परमात्मा पर्यन्त सभी तत्वों का यथार्थ ज्ञान होता हैं। यह दर्शन अलग–अलग ऋषि कृत होते हुये भी अन्तर्विरोध से रहित हैं। सभी दर्शन शास्त्र अनृत, व्याघात और पुनरुक्ति दोष से परे हैं। अपने–अपने विषय का वर्णन सभी शास्त्रकारों ने अपने–अपने तरीके से किया हैं। जिससे पदार्थ का यथार्थ बोध हो "दर्शन" कहते हैं। दृश्यतेऽ नेनेति दर्शनम्" सभी दर्शनों का अभिप्राय अज्ञानता, संशय, भ्रान्ति से हटा तत्वज्ञान को प्राप्त करा दुःखो से दूर करना हैं।

इन दर्शनों का सक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैः–

मीमांसा दर्शन– इस दर्शन के प्रणेता जैमिनी ऋषि थे। इस ग्रन्थ में बारह अध्याय, साठ पाद और 2731 सूत्र है। आकार की दृष्टि से यह सबसे बड़ा हैं। इसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय धर्म व यज्ञ हैं। पहला ही सूत्र "– अथातो धर्म जिज्ञासा। धर्म के विषय से शुरू होता हैं। धर्म व यज्ञ के अनुशीलन से मुक्ति को प्राप्त होना बताया हैं। इस दर्शन मे ज्ञानप्राप्ति के साधन, अध्यात्म विषय और मनुष्य के कर्त्तव्यों के प्रमाण के आधार पर व्यापक व्याख्या हैं। ऐसा कोई कार्य जगत में नहीं होता जिसको बनाने में कर्म

चेष्टा न की जाए।

न्याय दर्शनः– महर्षि गौतम कृत दर्शन में प्रमाण– प्रमेय आदि सोलह पदार्थ के तत्वज्ञान से निःश्रेयस अर्थात् मोक्षप्राप्ति का वर्णन किया हैं। इस दर्शन की शैली प्रथम उद्देश्य– पदार्थो का नामपूर्वक कथन, फिर उनके लक्षण तदनन्तर उनकी विस्तृत परीक्षा अर्थात् पदार्थो के तत्व ज्ञान से मिथ्याज्ञान की निवृत्ति तत्पश्चात् जन्मादि दुःख की निवृत्ति से मोक्ष की प्राप्ति। सत्यासत्य का निर्णय कैसे हो? ''प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय'' अर्थात् प्रमाणों से किसी पदार्थ की परीक्षा करना ही न्याय हैं। इस शास्त्र में ईश्वर, जीव और प्रकृति को अलग–अलग रूप में मानकर त्रैतवाद का समर्थन किया हैं। न्याय विद्या को आन्वीक्षिकी विद्या भी कहते हैं। ''न्याय''से ही सत्य की परीक्षा हो सकती हैं। जैसे–उपादान कारण न होने से कुछ नहीं बनता। निःश्रेयस की प्राप्ति का उपाय इस तरह बताया है– ''दुखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानां उत्तरोत्तरापाये तदन्तरापायादपवर्गः।।'' अर्थात्– दुःख, जन्म, प्रवृत्ति, दोष और मिथ्याज्ञान उत्तरोत्तर अर्थात् आगे–आगे के नष्ट हो जाने पर उसके अनन्तर के अव्यवहित पूर्व के नाश हो जाने से मोक्ष होता हैं।

वैशेषिक दर्शनः– यह दर्शन कणाद मुनि द्वारा रचित हैं। महर्षि कणाद के बारे में कहा जाता हैं कि वह खेतों में अन्न के दाने अर्थात् कण चुनकर उदरपूर्ति करते थे, इसलिए उन्हें कणाद नाम से जाना जाता हैं। जैसा इसके नाम से स्पष्ट हैं। इसमें धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय इन छः पदार्थो का विशेष रूप से प्रतिपादन हैं। इन पदार्थो के सूक्ष्म भेद साधर्म्य– वैधर्म्य की पद्धति से ही सम्भव हैं। इसे न समझकर अनेक भ्रान्तियों का जन्म हुआ। जैसे कोई नवीन वेदान्ती कहे ''जीवो ब्रह्ममेव चेतनत्वात्'' अर्थात् चेतन होने से जीव और ब्रह्म एक ही हैं (अद्वैतवाद) इसका खंडन विशेष धर्म भेद से हो सकता हैं। दोनों चेतन हैं, ज्ञानादि गुण–भेद से एक नहीं। मानव कल्याण के लिए व पुरुषार्थ–चतुष्टय सिद्धि के साधन धर्म को माना हैं। धर्म से ही अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि होती हैं– यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिःस धर्मः।।

सांख्य दर्शनः– इस दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि हैं। महर्षि कपिल मुक्ति के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं–

''अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।।''–
(सांख्य 1/1)

दुःख के समस्त प्रकारों का तीन वर्गो में समावेश किया गया हैं–आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक। इन तीन प्रकार के दुःखों की अतिशय निवृत्ति मोक्ष हैं। इसके लिए परम पुरुषार्थ की आवश्यकता हैं। विवेकज्ञान के लिए प्रकृति और पुरुष के सत्य रूप का निरूपण विशेषता से किया हैं। इस सिद्धान्त की मान्यता हैं कि तत्वों के संयोग के बिना उत्तरोत्तर कार्य संभव नहीं और हर कार्य में कारण तत्वों का अस्तित्व मौजूद रहता हैं। आधुनिक विज्ञान का सिद्धान्त भी यही हैं। उन्होंने सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति को माना है। ईश्वर निमित्त कारण हैं। तत्वों के तदनन्तर संयोग होने से सृष्टि रचना में 23 इसके कार्य पदार्थ हैं। प्रकृति सहित 24 तत्व व पुरुष 25वाँ तत्व माना हैं। नवीन वेदान्ती यह आरोप लगाते हैं कि कपिल निरीश्वरवादी थे। उन्होंने भ्रमवश पुरुष का अर्थ जीवात्मा ही समझा, जो सही नहीं हैं। देखिये 'ईश्वराधिष्ठते फल निष्पत्तिः' और 'स हि सर्ववित् सर्वकर्ता' अर्थात् जो ईश्वर सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहर्ता हैं, वही जीवों के कर्मो का फल देने हेतु सृष्टि की रचना कर जीवों को योनि प्रदान करता हैं।

योग दर्शनः– वर्तमान युग में दर्शनों में योगदर्शन सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। इसके रचयिता महर्षि पतंजलि हैं। इसी को राजयोग या अष्टांग योग से जानते हैं। योग के आठ अंग– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का इसमें निरूपण हैं। पतंजलि ने सांख्यकार की तात्विक पृष्ठभूमि को ही स्वीकार किया हैं। अतः यह दर्शन सांख्य दर्शन के पूरक के रूप में भी जाना जाता हैं। योग का अर्थ हैं जीवात्मा का परमात्मा से मेल। आज योग की चर्चा पूरे विश्व में अत्यंत लोकप्रिय हैं। योग विषय पर प्रथम प्रामाणिक व संपूर्ण ग्रन्थ पतंजलिकृत योगदर्शन ही हैं। कालान्तर में इसके अनेक भाष्य हुये, जिसमें प्रतिपाद्य विषय हेय, हेयहेतु, हान, हानोपाय, इन प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार दिया हैं :–

'' जो भावी दुःख हैं वही त्याज्य हैं। जो भोगा जा चुका या रहा हैं उसे सोचना निरर्थक हैं।''

'' अविद्या वश जीवात्मा और प्रकृति का संयोग दुःख का कारण हैं।''

'' प्रकृति, पुरुष का संयोग न होना ही कैवल्य (मोक्ष) हैं।

'' मोक्ष का उपाय विवेकख्याति हैं। मिथ्या ज्ञान के नष्ट होने और परवैराग्य प्राप्त होने पर विवेकख्याति होती हैं। इस ग्रन्थ में चार पाद हैं। प्रथम समाधि पाद में सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात योग का परिचय हैं। इसके अनुसार

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।' अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग हैं। दूसरे साधन पाद में समाधि कैसे प्राप्त की जा सकती हैं, इसका विवरण हैं। तीसरे विभूति पाद में योग से प्राप्त होने वाली शक्तियों का विवरण हैं। चौथा कैवल्य पाद में कैवल्य = मोक्ष के वर्णन का प्रतिपादन हैं।

उत्तरमीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन– वेदान्त दर्शन की रचना वेद व्यास बादरायण ने की। इसका दूसरा नाम ब्रह्मसूत्र या शारीरिक दर्शन भी हैं। इसमें चार अध्याय और 555 सूत्र हैं। आचार्य उदयवीर शास्त्री के अनुसार 'वेदान्त' पद का तात्पर्य हैं–

वेदादि में विधिपूर्वक अध्ययन, मनन तथा उपासना आदि के अन्त में जो तत्व जाना जाये उस तत्व का विशेष रूप से यहाँ निरूपण किया गया हो, उस शास्त्र को 'वेदान्त' कहा जाता हैं। इस दर्शन में मुख्य विषय ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। शंकराचार्य का यह मत कि " ब्रह्म सत्यो जगन्मिथ्या, एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, जीवो ब्रह्म नापरह, अहं ब्रह्मास्मि" अर्थात् जीव, ब्रह्म की एकता और प्रकृति मिथ्या इत्यादि की धारणा गलत हैं। युक्ति, तर्क और वेद प्रमाण रहित हैं, इसका वर्णन इस ग्रन्थ में विस्तार से मिलता हैं।

आत्मकल्याण के लिए जिज्ञासु धर्मप्रेमियों को उपर्युक्त दर्शनों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। आचार्य उदयवीर शास्त्री, आर्य मुनि जी आदि विद्वानों के हिन्दी भाष्य उपलब्ध हैं।

जोधपुर में वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन (वर्ष 2019)

वर्ष 2019 में मदन लाल तँवर के संयोजकत्व वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के तत्वावधान में किया गया। इस प्रतियोगिता में 102 विद्यालयों के 15000 विद्यार्थी भाग लिए। इन्हें अमृत कलश पुस्तक पढ़ने को दी गई थी। हर विद्यालय में कक्षावार प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सान्त्वना पुरस्कार दिये गये। सभी प्रतिभागियों एवं प्रभारी अध्यापकों को प्रशंसा पत्र दिए गए। कार्यक्रम में मदन लाल तँवर ने छात्र/छात्राओं को नैतिक शिक्षा प्रदान की। छात्र/ छात्राओं ने उनके उद्‌बोधन पर करतल ध्वनि से स्वागत किया। प्रधानाचार्य, अध्यापक, अध्यापिकाओं ने इस कार्यक्रम की सराहना की। यह पूर्णतः स्वाध्याय आधारित प्रतियोगिता हैं। बच्चे घर से उत्तर लिखकर लाते हैं। कुल 51 प्रश्न पूछे जाते हैं। इस प्रतियोगिता के आयोजन में मदन लाल तँवर के साथ सेवाराम आर्य एवं कैलाश चन्द्र आर्य ने सहयोग प्रदान कर प्रतियोगिता को सफल बनाया। ध्यातव्य हैं इस प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों में अच्छे संस्कार डाले जाते हैं। उन्हें वैदिक मान्यताओं से परिचय कराया जाता हैं। चार वर्ष में एक चक्र पूरा होता हैं।

विचार–मंजूषा

1. सकारात्मक सोच मनुष्य को हर परिस्थिति में सहायक बनकर संबल प्रदान करती हैं।
2. अच्छे विचारों के द्वारा मनुष्य जीवन की ऊँचाइयों को प्राप्त करता हैं।
3. दूसरे का अहित सोचने वाला सर्वप्रथम अपने आत्मा का हनन करता हैं।
4. आँखों से देखा हुआ, कानों से सुना हुआ, हाथों से किया हुआ, मुख से बोला हुआ सब चित्त में संचित रहते हैं।
5. जीवन को खेल समझकर नहीं खेलना चाहिए, जीवन का उद्‌देश्य बनाकर चलना चाहिए।
6. सफल और असफल होना दृढ़ इच्छाशक्ति के ऊपर निर्भर करता हैं।
7. हमें प्रकृति से सीख लेकर जीवों को सुख पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए।
8. विनम्रता, सेवा, उपकार, प्रेम, सदाचार आत्मा के आभूषण हैं।
9. मानवमात्र की सेवा करना ईश्वर की आज्ञा का पालन करना हैं।
10. परिश्रमी व्यक्ति को उसके परिश्रम का फल अवश्य मिलता हैं।
11. सेवा और समर्पण– भावना से मनुष्य का दिल जीता जा सकता हैं।
12. प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने से उसका सन्तुलन बिगड़ता हैं। उसका परिणाम दुःखद होता हैं। प्रकृति कल्याणकारी होती हैं।

"सत्गुणों तथा ईश्वर भक्ति से युक्त मानव का निर्माण वेदज्ञान से ही सम्भव"

मनुष्य अल्पज्ञ प्राणी होता हैं। इसका कारण जीवात्मा का एकदेशी, ससीम, अणु परिमाण, इच्छा व द्वेष आदि से युक्त होना होता हैं। मनुष्य सर्वज्ञ व सर्वज्ञान युक्त कभी नहीं बन सकता। सर्वज्ञता से युक्त संसार में एक ही सत्ता हैं और वह हैं सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा। परमात्मा ही सृष्टि में विद्यमान अनन्त संख्या वाले जीवों को उनके पूर्वजन्म के कर्मों व प्रारब्ध के आधार पर मनुष्य आदि अनेक योनियों में जन्म देता हैं। मनुष्य का जन्म भोग व अपवर्ग अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने के लिये होता हैं। मनुष्य जन्म लेकर हम अपने पूर्वजन्मों के संचित वा प्रारब्ध कर्मों के अनुसार सुख व दुःख रूपी भोगों को प्राप्त करते हैं। मनुष्य योनि उभय योनि हैं। अतः पूर्वजन्मों के कर्मों का भोग करते हुए हम नये शुभ व अशुभ कर्मों को भी करते हैं। नये कर्म मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। इन्हें क्रियमाण, संचित व प्रारब्ध कर्म कहा जाता है। क्रियमाण कर्मों का फल व परिणाम हमें साथ साथ प्राप्त होता हैं। संचित कर्मों का फल इसी जीवन के उत्तर काल में उनके परिपक्व होने पर मिलता हैं। प्रारब्ध कर्म वह कर्म होते हैं जिनका हमें इस जन्म में फल नहीं मिलता। इन कर्मों का फल भोगने के लिये ही परमात्मा हमें नया जन्म देते हैं।

हमारे प्रारब्ध कर्मों के आधार पर ही परमात्मा द्वारा हमारी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जातियों में से किसी एक का निर्धारण होकर हमें वहां जन्म मिलता हैं। प्रारब्ध के अनुसार ही हमारी आयु निश्चित होती हैं तथा सुख व दुःख प्राप्त होते हैं। मनुष्य जो कर्म कर लेता हैं, उसका फल उसे भोगना ही पड़ता हैं। उसके फल से बचने का मनुष्य के पास कोई उपाय नहीं हैं। कोई धर्मात्मा, आचार्य व मत–मतान्तर कर आचार्य या संस्थापक किसी मनुष्य के किये हुए पाप आदि कर्मों से उसे मुक्त व क्षमा प्रदान नहीं करा सकते। यदि कोई ऐसा कहता व मानता हैं तो वह सत्य न होकर असत्य होता हैं। ऋषि दयानन्द ने कहा हैं कि यदि परमात्मा स्वयं व किसी की प्रार्थना व प्रेरणा से कर्मों को क्षमा कर दे तो उसकी न्याय व्यवस्था समाप्त हो जायेगी। परमात्मा सभी जीवों के शुभाशुभ कर्मों का याथातथ्य फल यथासमय देता हैं। वह फल हमें साथ साथ अथवा भावी काल सहित जन्म व जन्मान्तर में भोगने होते हैं। हमें इन सब बातों को जानकर ही अपने जीवन को जीना चाहिये। ऐसा करने से हम सत्कर्मों को करके अपने सुखों में वृद्धि तथा दुःखों को दूर कर सकते हैं। इससे अनभिज्ञ रहने पर हमसे अनजानें में भी अनेक अशुभ कर्म हो सकते हैं जिसका परिणाम दुःख हमें भोगना पड़ता है। कर्म फल सिद्धान्त ही इस सृष्टि की उत्पत्ति, संचालन व पालन तथा जीवों के जन्म व मरण का मुख्य कारण व आधार हैं।

मनुष्य को अधिक से अधिक सुख मिले तथा वह जन्म व मरण के बन्धन व इससे होने वाले दुःखों से दूर हों, इसके लिये मनुष्य को प्रयत्न करने होते हैं। वेदज्ञान इसमें एक आचार्य एवं मार्गदर्शक के रूप में सहायक होता हैं। इसके लिये हमें संसारस्थ सभी मनुष्यों को ज्ञानवान तथा सत्कर्मों का करने वाला और साथ ही सच्चा ईश्वर उपासक बनाना होगा। यदि यह गुण मनुष्यों में नहीं होंगे तो मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन सहित सामाजिक जीवन भी सुखमय नहीं हो सकता। संसार में सुख तभी हो सकता हैं कि जब सब मनुष्य ज्ञानवान हों तथा अपने निजी व सामाजिक कर्तव्यों को जानकर उनका यथोचित रीति से पालन करें। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया था। वेदों में मनुष्य का सर्वांगीण विकास करने की क्षमता हैं। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। वेदों में ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति सहित मनुष्य के लिये आवश्यक सभी विषयों का ज्ञान हैं। ईश्वर सहित जीवात्मा तथा प्रकृति का सत्यस्वरूप जानकर ही हम ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना व उपासना कर सकते हैं। वेदज्ञान से शून्य मनुष्य ईश्वर के सत्यस्वरूप व उसकी उपासना की विधि को नहीं जान सकते। महाभारत युद्ध के बाद वेदों का व्यवहार न होने के कारण वेद विलुप्त हो गये थे। वेदज्ञान के विलुप्त होने के कारण ही समाज में अज्ञान व अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा कुरीतियां उत्पन्न हुई थी जिससे मनुष्य के व्यक्ति जीवन सहित संसार में दुःखों का प्रसार हुआ था।

वेद ज्ञान के विलुप्त होने के कारण ही संसार में अविद्यायुक्त मत–मतान्तर उत्पन्न हुए जिन्होंने परस्पर स्पर्धा करते हुए मतान्तरण व परस्पर संघर्ष कर सामान्य मनुष्यों के जीवन को दुःखों से युक्त किया। अतः मत–मतान्तरों की अविद्या व परस्पर विरोधी बातों को दूर कर ही देश व समाज में सुख व शान्ति की स्थापना की जा सकती हैं। यही कार्य ऋषि दयानन्द ने अपने समय में किया था। इसके लिये ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप तथा मृत्यु पर विजय पाने के उपायों की खोज की

थी। ऐसा करते हुए वह अनेक धार्मिक विद्वानों तथा योग गुरुओं सहित विद्या गुरुओं के सम्पर्क में आये। उन्होंने उन सबसे संगति कर ईश्वर, सत्यधर्म तथा मृत्यु पर विजय के साधनों पर चर्चा की। योगाभ्यास से वह ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर उसका साक्षात्कार कर सके थे। इस पर भी उनके मन में अनेक शंकायें थी जो विद्या प्राप्त कर ही दूर हो सकती थी। इसके लिये उन्होंने विद्या गुरु की खोज की थी। सौभाग्य से उन्हें वेदों के उच्च कोटि के विद्वान प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा विद्या गुरु के रूप में प्राप्त हुए थे।

स्वामी विरजानन्द जी से अध्ययन कर स्वामी दयानन्द जी की सभी शंकायें दूर हुई थी तथा उनकी सभी जिज्ञासाओं का समाधान हो गया था। स्वामी दयानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द जी से सन् 1860 से सन् 1863 तक लगभग तीन वर्ष वेदांगों का अध्ययन किया था। इस अध्ययन से वह वेदों के मन्त्रों के यथार्थ अर्थों को जानने की क्षमता से सम्पन्न हुए थे। कालान्तर में उन्होंने वेदों को प्राप्त कर अपने धार्मिक व सामाजिक सिद्धान्त निश्चित किये। ऐसा कर लेने पर उन्होंने सभी मत–मतान्तरों के ग्रन्थों का गहन अध्ययन कर उनकी मान्यताओं व सिद्धान्तों एवं परम्पराओं का भी अध्ययन किया था। उन्हें विदित हुआ था कि सभी मत–मतान्तर अविद्या व अज्ञान से युक्त हैं। सभी मनुष्यों का यथार्थ धर्म तो एक ही होता हैं। संसार में ईश्वर एक ही हैं। सब मनुष्यों का जन्म दाता भी वही एक ईश्वर हैं। अतः ईश्वर की शिक्षा व उसके कर्म फल सिद्धान्त को जानकर आचरण करना ही सत्य धर्म होता हैं। सब मनुष्यों का वह धर्म वेदों में निहित ईश्वर की आज्ञा का पालन करना हैं। इस निश्चय को प्राप्त होकर ही विश्व के कल्याण हेतु महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार का कार्य आरम्भ किया था।

ऋषि दयानन्द ने एक आदर्श आचार्य व गुरु की तरह धर्म व समाज संबंधी अविद्या को दूर करने के लिये उसका खण्डन किया और अविद्या युक्त कथनों के स्थान पर विद्यायुक्त वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों से देश देशान्तर की जनता को परिचित कराया। उन्होंने मनुष्य जीवन में यम व नियम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान आदि गुणों को अपनाने पर बल दिया था। बिना इसके अपनायें मनुष्य सच्चा व आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत मनुष्य नहीं बन सकता। ऐसा बन कर ही मनुष्य को वर्तमान तथा भविष्य सहित पुनर्जन्म में भी सुख प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य व समाज की उन्नति के लिए सत्य का मण्डन तथा असत्य का खण्डन व समालोचना आवश्यक होती हैं। यही कार्य ऋषि दयानन्द ने किया। ऐसा करके ऋषि दयानन्द ने समाज के समाने सत्य धर्म जिसे मानव धर्म का पर्याय कह सकते हैं, प्रस्तुत किया हैं।

ऋषि दयानन्द को आशा थी कि संसार के सत्य प्रेमी सभी लोग उनके विचारों व मान्यताओं को स्वीकार कर लेंगे परन्तु ऐसा हुआ नहीं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में कहा हैं कि मनुष्य का आत्मा सत्य व असत्य को जानने वाला होता हैं तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह तथा अविद्या आदि दोषों के कारण सत्य को छोड़कर असत्य में झुक जाता वा प्रवृत्त हो जाता हैं। इन्हीं कारणों से मनुष्य सत्य से दूर होकर मत–मतानतरों में रहकर अपना जीवन गुजार देते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में वेदों के सत्यस्वरूप सहित सत्य मानवधर्म का प्रकाश भी किया हैं। सहस्रों व लाखों निष्पक्ष सत्य प्रिय लोगों ने सत्यार्थप्रकाश, वेद तथा आर्यसमाज को अपनाया। किसी ने पूर्ण तो किसी ने आंशिक रूप में अपने हिताहित के अनुसार ऋषि दयानन्द व वेदों के सिद्धान्तों को स्वीकार किया। इससे देश देशान्तर में समाज सुधार की नींव पड़ी थी। यह देश व संसार का दुर्भाग्य ही हैं कि सभी लोगों ने सत्यार्थप्रकाश में वर्णित वेदों की सत्य मान्यताओं को स्वीकार नहीं किया। इसके परिणाम हमारे सामने हैं। वेद के मानने वाले भी पूर्णतः संगठित नहीं हैं। इससे देश व समाज को अनेक हानियां हो रही हैं। संगठित होकर धर्म का प्रभावशाली प्रचार इसी कारण से विगत अनेक वर्षों से नहीं हो सका। अतः सभी मनुष्यों को वेद व ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कर सत्य को जानने व उसे अपनाने की प्रेरणा लेनी चाहिये। इससे ही मनुष्य के निजी जीवन सहित परलोक के जीवन का सुधार व उन्नति होगी।

वेदों का अध्ययन करने से हमें मनुष्य को धारण करने योग्य सभी सत्य गुणों का ज्ञान होता हैं। यम व नियमों में भी उनका दिग्दर्शन होता हैं। हमें मनुष्य को धारण करने योग्य सभी गुणों को जानकर उन्हें धारण करना चाहिये। सबको पक्षपात रहित होना चाहिये व न्याय के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिये। वेद

अनुमोदित पंच महायज्ञों का भी सबको सेवन करना चाहिये। इससे हम सच्चे ईश्वर, मातृ, पितृ तथा आचार्यों के भक्त बनेंगे। इससे हमारी अविद्या दूर होकर हम सर्वज्ञ ईश्वर की विद्या वेद से युक्त होकर अज्ञान से मुक्त और विद्या से युक्त हो सकेंगे। ऐसा करके ही हमारे जीवन से पाप कर्मों की निवृत्ति होने तथा शुभ कर्मों की अधिकता होने से हम दुःखों से मुक्त तथा सुखों व आनन्द से युक्त होंगे तथा परलोक में भी हमें सुख, शान्ति व मोक्ष की प्राप्ति हो सकती हैं। वेदों के अनुसार जीवन व्यतीत करने से ही मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति होती हैं। वेदों का ज्ञान ही सबके लिये जानने योग्य व आचरण करने योग्य हैं। वेद का अध्ययन व आचरण करने वाले मनुष्य को जीवन में कभी पश्चाताप नहीं होता। वह जन्म व जन्मान्तरों में सुख पाता हैं। ईश्वर ऐसी ही अपेक्षा सभी जीवों से करते हैं कि वह सब वेद विहित कर्मों को करते हुए अपने जीवन का कल्याण करें।

—मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनि नगर द्वारा योग साधकों का सम्मान किया गया

पतंजलि योगपिठ हरिद्वार द्वारा संचालित पतंजलि योग समिति जोधपुर द्वारा आयोजित 25 दिवसिय सहयोग शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आज सम्पन्न हुआ इस शिविर में 34 योग साधकों ने भाग लिया।यज्ञ के ब्रह्मा सेवाराम आर्य के सानिध्य में आरम्भ हुआ। योगासन प्रतियोगिता में प्रथम अरुण जैन व द्वितीय जतीन भाटी को पुरस्कृत किया गया । योगा सर्टिफिकेशन बोर्ड में उतीर्ण सभी साधको को स्मृति चिन्ह एवं सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक भेट की गई।

कैलाश चन्द्र आर्य

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अन्तर्गत समस्त आर्य समाजों को निवेदित किया जाता हैं कि जिन संस्थाओं का वित्तवर्ष 2019–20 का दशांश, निश्चित् कोटि, आर्य मार्तण्ड शुल्क शेष हैं वे शीघ्र ही सभा के सीधे अथवा चेक द्वारा जमा करवाकर राजापार्क स्थित सभा कार्यालय को सूचित करें जिससे यथाशीघ्र सधन्यवाद प्राप्ति रसीद भिजवाई जा सके जिन संस्थाओं का विगत् 2 वर्ष से दशांश जमा नहीं हुआ हैं वे दो वर्ष का दशांश नियमानुसार भेज देवे।

सभा मंत्री

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अंतर्गत करमुक्त है।

आर्य मार्तण्ड के पाठकों के लिये सूचना

आर्य मार्तण्ड पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता हैं कि जिन ग्राहकों का जो भी शुल्क बकाया हैं। वे सभी सुधी पाठकगण बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करवाने या भिजवाने का श्रम करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर प्रेषित करते रहें।

कार्यालय प्रभारी

विज्ञापन आमन्त्रित

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुख पत्र आर्य मार्तण्ड पाक्षिक में आप विज्ञापन देकर लाभ उठा सकते हैं।

सम्पर्क
कार्यालय
आर्य मार्तण्ड राजापार्क, जयपुर
सम्पर्क सूत्र – 0141–2621879

आर्य समाज पाणिनि नगर जोधपुर में योग साधकों को स्मृति चिन्ह भेंट किये गए ।

आर्य समाज अलवर के आर्य जन कोरोना जागरुकता संदेश देते हुए ।

सभा के उपप्रधान सेवाराम आर्य योग कार्यक्रम आयोजको को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुवे ।

आर्य समाज पाणिनि नगर जोधपुर में यज्ञ करती आर्याएँ ।

आर्य समाज अलवर के प्रधान श्री प्रदीप आर्य मास्क वितरित करते हुवे ।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 आर. एन. आई नं.10471/60

प्रेषक:-
सम्पादक,
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास, राजा पार्क,
जयपुर-302004